मुक्तिबोध के काव्य का कलापक्ष

डॉ. बाळासाहेब पगारे
बी .एन. एन. महाविद्यालय, भिवंडी

मुक्तिबोध की कविता अपने समय का जीवित इतिहास है। उनकी कविता में अपने युग के यथार्थ की आंतरिक और बाहय यथार्थ अभिव्यक्ति मिलती है। वह यथार्थ उनकी कविता में पूरे कलात्मक संतुलन के साथ मौजूद है। उनकी कल्पना वर्तमान से सीधे टकराती है, जिसे हम फैन्तासी के रूप में देख सकते है। समकालीन जीवन की अभिव्यक्ति के साथ एक गहरे आत्मविश्वास के कारण उनकी कविता नयी कविता की पहचान होते हुए भी उससे आगे निकल जाती है। वे चीजों को मार्क्सवादी दृष्टि से देखने के कारण उनकी कविता में सामाजिक यथार्थ का चित्रण मिलता है। उनकी कविता आजादी के बाद की भ्रष्ट पूँजीवादी व्यवस्था, अन्याय, अत्याचार और शोषण के विसंगति को गहराई के साथ अभिव्यक्त करती है। यह विसंगति–बोध कविता को आत्मसंघर्ष की ओर ले जाता है। उनकी कविता में गहरी मानवीय संवेदना मिलती है। वे मानवता के अपनी प्रतिबध्दता माननेवाले कवि है। उनकी काव्ययात्रा छायावाद से होकर प्रगतिवाद, प्रयोगवाद और नया कविता की युगधारा को जोडती काम करती है। उनके काव्य की भाषा और शिल्प के प्रयोग नये रचनाकारों के लिए प्रेरणा स्रोत बनी है। उन्होंने कबीर और निराला से प्रेरणा लेकर काव्य में मुक्तछंद का सहजग्राहय और सटीक प्रयोग किया है। मुक्तिबोध के काव्य की भाषा और शिल्प की पहचान उनके अनूठे प्रतीक, बिंब, अलंकार छंद, मुहावरे, लोकोक्तियाँ और फैंटैसी से होती है।

काव्यभाषा :

भाषा एक निरंतर चलनेवाली प्रक्रिया है। वह साहित्य में कवि की अभिव्यक्ति का माध्यम होती है। भाषा के अभाव में कवि भावनाओं की अभिव्यक्ति नहीं कर सकता है। मुक्तिबाोध एक सशक्त यथार्थवादी कवि होने के कारण उनकी काव्य भाषा उनकी विचारधारा और दृष्टिकोन से प्रभावित है। इस संदर्भ में जगदीश गुप्त लिखते है, ''मैं उनकी कविताओं को पढ़कर इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि उन्होंने अपनी अभिव्यक्ति के अनुरूप रूपकों, प्रतिकों, बिम्बों की परिकल्पना करते हुए सशक्त भाषा गढ़ी है। अतः जितने अंशो में उनकी अभिव्यक्ति सफल हुई है उतने अंशों में वे अपनी मान्यता के अनुरूप महान कहलाने के हकदार है।'' उन्होंने जीवन की वास्तविकता को प्रस्तुत करने के लिए यथार्थ अभिव्यक्ति का प्रयोग किया है। उन्होंने काव्य में तत्सम, तद्भव, अरबी, फारसी तथा अगेंजी भाषा के शब्दों का सटीक प्रयोग किया है। अतः उनके काव्य में नये युग की चेतना और अभिव्यक्ति के साथ भाषा का विद्रोह भी मिलता है। उनकी कविता को पढ़ने के बाद पता चलता है कि उन्होंने शब्दों के सौंदर्य की अपेक्षा अर्थ पर जोर दिया है। उन्होंने अपने जीवनानुभव को व्यक्त करने के लिए कविता को लालटेन की रोशनी जैसे बनाने की कोशिश की है। इस संदर्भ में वे कहते है,''कविता यदि जीवन वहन लालटेन हो सके तो हमें प्रयत्न करना होगा।'' उबड़–खाबड़ जीवन यथार्थ को व्यक्त करनेवाली भाषा भी वैसी होनी चाहिए। मुक्तिबाोध के काव्य के मुख्य अंधेरा, टेरर और प्रकाश यह तीन मुख्य बिंदु है। अंधेरा और टेरर यथार्थ की भयावह देन है। प्रकाश इस भयावह से उभरने का जरिया है। वे अपनी बात कभी सरलता से तो कभी फैंटसी के द्वारा कहते थे। उनकी कविता में यह स्पष्ट रूप से दिखाई देती है,

वे कहते हैं भाषा विचित्र
जिसमें शब्द है कलाहिन
जिसमें प्रयोग है ग्रम्य और वे अति कठोर
जो भी नविन
पर तू सून मत ओ उदगार''

उन्होंने अपने काव्य में विदेशी शब्दों का प्रयोग भावानुरूप किया है। जैसे, **अरबी** का प्रयोग– 'कोलाहल करत सगर्व उद्धत मजदूरों का जुलूस'। **अंग्रेजी** का प्रयोग– 'रेफ्रीजेरटरों , विटामिनों, रेडिओ ग्रामों के बाहर की, मैं कनफटा हूँ, शेव्रलेट डाज के नीचे लेटा हूँ।' **मराठी** का प्रयोग–नक्षीदार, कंदील, बास आदि। **देशज** शब्द– बावड़ी, कलेर, चुनरी, माटी, झोल आदि से अपने काव्य में यथार्थ की सहजता व्यक्त करते है। उन्होंने अपनी अभिव्यक्ति को सार्थ और सशक्त बनने के लिए रंगों का भी प्रयोग किया है। जैसे–'लाल पीली लौ, काली–काली जीभ वाली लालटेन' उनकी अभिव्यक्ति को प्रभावशाली बनाती है। उन्होंने जीवन संघर्ष की तरह शब्दों के साथ भी द्वंद्व किया है। अपनी भावाभिव्यक्ति के लिए शब्दों की तरह आवश्यकता नुसार मुहावरे और लोकोक्तियों का प्रयोग भी प्रचरा मात्रा में हुआ है। उनके काव्य में मुहावरों का प्रयोंग इस प्रकार मिलता है, जैसे–जमाना सांप का काटा, सच्चाई की आंख निकलना, दिल की बस्ती उजडना, हार का बदला चुकाना, मन टटोलना, मूठ मारना, अपना गणित करना, जीतोड मेहनतकश, रास्ता काटना, आईना होना आदि मुहावरों से अपनी अभिव्यक्ति को यथार्थ बनाया है।

व्यंग्य और यथार्थ एक ही सिक्के के दो पहलु होते है। साहित्य में व्यंग्य के माध्यम से समाज एवं व्यवस्था की विसंगतियाँ और विडंबनाओं पर तिखा प्रहार किया जाता है। मुक्तिबोध जनवादी कवि होने से सामाजिक समस्या और संवेदनाओं के साथ गहराई से जूड़े है। आजादी के पश्चात की पूँजीपति व्यवस्था, सामाजिक, आर्थिक विषमता, शोषण, अन्याय, अत्याचार, और राजनीतिक विसंगतियों खुलकर प्रहार करते है। उनकी ब्रह्मराक्षस कविता में निष्क्रिय बौध्दिकता पर तिखा व्यंग्य मिलता है।

जैसे–

''तिरछी गिरी रवि रशिम के उडते हुए परमाणु
जब तल तक पहुँचते है कभी
तब ब्रह्मराक्षस समझता है सुर्य ने झुककर नमस्ते कर दिया ''

मुक्तिबोध का पैना व्यंग्य यथार्थ को उद्घाटित करने में सफल हुआ है। उनकी कविता में सामान्य जन की विवशता पर गहरा व्यंग्य मिलता है।

जैसे– ''अजीब जिंदगी है,
बेपकूफ बनने की खातिर ही
सब तरफ अपने को लिए लिए फिरता हूँ

और यह देख–देख बड़ा आता है

कि मैं ठगा जाता हूँ।''

अतः सामान्य जन के दुख–दर्द को व्यक्त करने के लिए व्यंग्यात्मक शैली अपनाना उनकी मजबूरी थी।

अलंकार :

जिस तरह अलंकार आभुषणों से नारी का सौंदर्य खिलता है, उसी प्रकार अंलकारों के प्रयोग से काव्य की अभिव्यक्ति रोचक और प्रभावशाली हो जाती है। मुक्तिबाोध ने भी काव्य को सरल, सहज और प्रभावी बनाने के लिए अलंकार का प्रयोग किया है। प्रारंभ में छायावादी काव्य की प्रेरणा से उनके काव्य में अलंकारों का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में हुआ है।'चाँद का मुँह टेढ़ा है' कविता मे चाँदनी का मानवीकरण हुआ है। कही वह हँसती है, कही वह रोती है, जीती है, जैसे– ''धाराशाही चाँदनी के ओठ काले पड गए।''

उदा ''मकान मकान घुस,

लोहे के गजों की जाली के झरोखे पार कर

लिपे हुए कमरों में

जेल के कपडों सी फैली है चाँदनी।''

काव्य में रहस्यात्मकता लाने हेतु उत्प्रेक्षा अलंकार का प्रयोग किया गया है।

छंदः

छंद कविता का जीवन माना जाता है। प्राचीन काल से आज तक काव्य में छंदों को प्रयोग होता आया है। यथार्थवादी मुक्तिबाोध ने परंपरा को तोडकर विद्रोही प्रवृत्ति के लिए मुक्त छंद में रचनाएँ की है। उन्होंने अाभिव्यक्ति की सरलता और स्पष्टता के लिए मुक्त छंद में रचनाएँ की है।

प्रतीक :

प्रकति संबधी जो उपमान हमारी सुप्त भावनाओं को उजागर कर हमारे भावों और विचारों का प्रतिनिधित्व करते है, उन्हें प्रतीक कहते है। मुक्तिबोध ने मानव मन को व्यक्त करने के लिए अनेक प्रतिकों का प्रयोग किया है। जैसे– 'गगन में सुनहले कमल' आशा का प्रतीक है, तो 'बावडी' निराशा का प्रतीक है।'अंधेरा' भय का प्रतीक है। सामान्य जनों रोजमर्रा अभिशप्त जीवन से संबधित प्रतीक भी मिलते है। जैसे– 'कण्डे की लाल आग', 'ईमान का डण्डा','बुध्दि का बल्लम', 'अभय की गेती' आदि शोषित जीवन के प्रतीक है।

फैंटसी–

फैंटसी का सीधा संबध कल्पना से है। वह हमारी सतृप्त इच्छाओं की तृप्ति का साधन है। सभी विधि–विधानों से मुक्त मनुष्य की कल्पना तरंग है जो कालातीत होती है। फैंटसी के संदर्भ वे स्वयं कहते है, ''फैंटसी एक झीना पर्दा है,

जिसमें जीवन तथ्य झांक झांक उठते है। फैंटसी का ताना बाना कल्पना बिम्बों में प्रकट होनेवाली विविध क्रिया–प्रतिक्रियाओं से बना हुआ होता है।'' समकालीन कवियों में मुक्तिबोध ने फैंटसी का प्रयोग सबसे जादा किया है। वे अंतर्मुखी और मार्क्सवादी कवि होने के कारण फैंटसी का प्रयोग किया। आज के जीवन यथार्थ पर मिथ्या और पाखंड ने घर कर लिया है। अतः इससे परिचित करने के लिए फैंटसी का प्रयोग किया है। उनकी लंबी कविताओं में अलंकार, बिम्ब, प्रतीक मिलकर फैंटसी का रूप प्रयुक्त हुआ है। जिसमें पहाड, पठार गुफा, समुंदर, अंधेरा, बावडी आदि है। इसमें कवि की अतिरंजित कल्पना ही सत्य का उद्घाटन करती है। अंधेरे में फैंटसी के स्तर पर नाटय शैली में अभिव्यक्त हुई है।

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि मुक्तिबोध ने काव्य में प्रतीक, बिम्ब, अलंकार मुहावरे, लोकोक्तियाँ, छंद, विविध भाषा के शब्द और फैंटसी का यथार्थ अभिव्यक्ति के लिए भावानुरूप, प्र्याप्त मात्रा में प्रयोग करते हुए अपने काव्य को सहज, सरल और प्रभावशाली बलाकर हिंदी साहित्य अपनी अलग पहचान बनायी है।

संदर्भः मुक्तिबोध की प्रतिनिधि कविताएँ

मुक्तिबाोध रचना संसार–गंगा प्रसाद विमल